महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के वाणिज्य अध्ययनशाला के नव निर्मित भवन के लोकार्पण समारोह में उद्बोधन

स्थान :- इंदौर, दिनांक :- 23 सितम्बर, 2012 समय :- दोपहर : 12.30 बजे

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के वाणिज्य अध्ययनशाला के नवनिर्मित भवन के लोकार्पण समारोह में भाग लेते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता है। सर्वप्रथम मैं इस खास मौके पर आप सबको बधाई देता हूं।

विश्वविद्यालय के बेहतरीन विकास का यह सोपान एक महत्वपूर्ण उपलब्धि तो है ही, साथ ही वाणिज्य जैसे गुरूतर विषय के सुधी विद्यार्थियों के लिये भी यह भवन, आधारभूत सुविधा का एक अपूर्व दृष्टान्त साबित होगा। मूल्यपरक और गुणात्मक शिक्षा को प्रोत्साहित करने तथा उसके अनुरूप वातावरण निर्मित करने की दिशा में, विश्वविद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं का विशेष महत्व है। कार्यकुशलता और समय का प्रबन्धन सफलता का रहस्य है। मूलभूत सुविधाएं सफलता का मार्ग प्रशस्त करती हैं। नये परिवेश में वाणिज्य विषय के विद्यार्थी ज्ञान एवं शोध के नित नये आयाम प्राप्त करेंगे।

वर्तमान समय टेक्नालॉजी का युग है। प्रतिपल विकसित होने वाली नई खोजों ने हमारे रहन-सहन को, हमारी वैचारिक पद्धतियों को और हमारे पूरे सरोकार को बदला है। कल तक अनजान और अनभिज्ञ वस्तुएं आज हमारे उपयोग की वस्तुएं बन गई हैं। तकनीकी की विराट श्रृंखला के आविर्भाव ने सारी दुनिया को चकित किया है। तकनीकी विकास के इस अभूतपूर्व स्वरूप के साथ ही सबसे अधिक बदलाव वाणिज्य और व्यापार की अवधारणाओं में आया है। वैश्विक बाजारवाद के कारण वाणिज्य और व्यापार की परम्परागत नीतियां और रीतियां अब पीछे छूट रही हैं। नए सूचना तंत्र और कम्प्यूटर के इस युग में बाजार और वाणिज्य का रूप बदल गया है। अब इन्टरनेट से सीधे ऑनलाईन खरीदारी की सकती है। ऑनलाईन ब्राण्ड की स्थापना ने वाणिज्य का फिर एक नए तंत्र की ओर मोड़ दिया है। व्यापार और व्यवसाय के नये प्रबन्धन ने देशों की सरहदों को तोड़कर एक आंगन में खड़ा कर दिया है। वाणिज्य और व्यापार की नवीन संभावनाओं के कारण इन क्षेत्रों में हुए आविष्कारों ने कल्पना और यथार्थ के बीच की खाई भी कम कर दी है।

अत्याधुनिक तकनीकों के साथ भौतिक विकास अपनी चरम सीमा पर प्रतिष्ठित होने वाला है। मुझे लगता है कि इस विकास की दौड़ में कुछ और चीजें भी जुड़नी चाहिये जिससे हमारी वैचारिक और भावनात्मक क्षमताएं भी विकसित हों और उनमें अभिवृद्धि हो। केवल भौतिक विकास मनुष्य का चरम लक्ष्य नहीं हो सकता, आंतरिक विकास भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जिस प्रकार आज हम आधुनिक तकनीक से परिपूर्ण है उसी प्रकार हमें अपनी भावनाओं तथा विचारों में भी क्षमतावान होना चाहिये, क्योंकि सम्यक विकास की धारा हमारे आंतरिक तत्वों से अविच्छिन्न रूप से जुड़ी है। साधन सुविधाओं के होते हुए यदि हमारी भावनाएं रिक्त और कलुषित हो गई तो भौतिक विकास की ये बातें हमें सदैव चुभती रहेंगी।

विशेष रूप से वाणिज्य के विद्यार्थियों से मैं यह कहना चाहूंगा कि वाणिज्य, व्यापार, व्यावसाय और उसका प्रबन्धन मानव जीवन के साथ जुड़े हैं। समय के साथ इसमें नई बातें जुड़ी हैं तथा भविष्य में भी निरन्तर उपयोगी विचार जुड़ते रहेंगे। वाणिज्य और प्रबंधकीय सफलता के लिए कुछ बातें आवश्यक हैं जिन पर विद्यार्थियों को ध्यान देना चाहिए जैसे सकारात्मक सोच तथा कमिटमेण्ट। सकारात्मक सोच से लक्ष्य का आधा भाग तय कर लिया जाता है। चीजों की ओर देखने का नजरिया ही हमारी सफलता या असफलता की दिशा का निर्धारण कर देता है। सफलता के मार्ग में आने वाले अवरोधों से मन में निराशा और हताशा उत्पन्न होती है। उसका समाधान सकारात्मक सोच से किया जा सकता है।

काम को निश्चित समयावधि में पूर्ण करने की आदत डालनी चाहिए। समय पर किया गया कार्य हमारे अनुशासन को भी दर्शाता है। अनुशासन एवं समय प्रबंधन का गहरा संबंध है। किसी भी कार्य में हमारे साथ दूसरे लोग भी जुड़े होते हैं। यदि हम अपने कार्य को समय पर कर देंगे तो हमारे साथ कार्य करने वालों का समय भी बचता है।

इसी प्रकार कमिटमेण्ट लक्ष्य प्राप्ति का और सफलता प्राप्त करने का अचूक साधन है। जो हम कहते हैं, हमें उसे निभाना भी आना चाहिए, ऐसे ही व्यक्ति की प्रमाणिकता होती है तथा सफलता भी उसी के हाथ लगती है।

आप सब को बधाई और शुभकामनाएं।

जय हिन्द।